पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/09510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2024-2026 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 27, अंक 260 जून 2025

कबीर गर्व न कीजिये, काल गहे कर केश।
ना जाने कित मारि है, क्या घर क्या परदेश ।।

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 27 अंक 260
जून 2025

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/09510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ. बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	3
2	A Study of Educational Opportunities of Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya Students	Dr. R. Pushpa Nameo	4
3	A Study of Human Values and spiritual intelligence for maintaining cordial relationships among academicians	Richa Asthana (Research Scholar) Dr. Asha Srivastave (Assistant Professor)	7
4	A Philosopher Bhimrao Ambedkar He is Relevant Even Today	Dr. Virender Kumar Chandoria (Assistant Professor) Dr. Pooja Singh (Assistant Professor)	13
5	Ambedkar's Thought on Caste and Untouchability	Dr. Sourav Naskar (Assistant Professor)	16
6	Ambedkar's Thought on Caste and Untouchability	Dr. Sourav Naskar (Assistant Professor)	16
7	माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा एवं सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन	डॉ. राजकुमारी गोला सहायक प्रोफेसर कु. मोनिका शोधार्थिनी	19
8	मिडिल स्टेज पर अध्यनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन	डॉ. राजकुमारी गोला सहायक प्रोफेसर उमरा इदरीस शोधार्थिनी	22

UGC Care Listed Journal
खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

प्राप्त होता है कि छात्र एवं छात्राओं की अभिप्रेरणा में कोई साथर्क अन्तर नहीं है। अर्थात छात्र एवं छात्राओं की अभिप्रेरणा समान स्तर का पायी गयी। छात्र एवं छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है । अर्थात छात्र एवं छात्राओं की अभिप्रेरणा में कोई विशेष अन्तर नहीं है जो भी अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा है वह संयोगवश है। छात्रों की सांवेगिक बुद्धि छात्राओं की अपेक्षा अधिक उच्च है। छात्रों की सांवेगिक बुद्धि में छात्राओं की अपेक्षा सकारात्मक प्रबलता है। छात्रों की सांवेगिक बुद्धि छात्राओं से अधिक सकारात्मकता लिये हुए है ।

– डॉ. राजकुमारी गोला
सहायक प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

– कु. मोनिका शोधार्थिनी
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद
मोबा. 7668206043

संदर्भ :

- चौहान, आर एंव पी0डी0 (2015) अग्रवाल पब्लिकेषन्स आगरा–2 प्रथम संस्करण (2015–16) 98–102।
- डॉ माथुर, एस0एस0 (2011) षिक्षा के दार्षनिक तथा सामजिक आधार, अग्रवाल पब्लिकेषन्स आगरा–2।
- दीक्षित, एस0 (1989) शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व कारकों, बुद्धि एवं आत्म सम्प्रत्य का प्रभाव अप्रकाषित शोध प्रबंध मनोविज्ञान, आगरा विष्वविद्यालय, आगरा।
- वर्मा, पी0 एव श्रीवास्तव, डी0एन0 (2014) आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, आगरा पब्लिकेषन्स, सोलहवॉ संस्करण 216–223।
- शर्मा, आर0ए0 (2005) षिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेषन्स, आर. लाल बुक, डिपो, मेरठ संस्करण (2005), 29–32।
- सिंह ए0के0 (2013) उच्चतर सामन्य मनोविज्ञान, पटना विष्वविद्यालय पटना, षष्टम संस्करण (2013), पेज नं 142–145।
- Deshpande, M.B. (1984), An analytic study of cognitive affective development and scholastic achievement of tribal secondary school students. Unpublished Ph.D. thesis. Nagpur University. Nagpur.
- Montisi, M.R. (1979), A study of the self-concept of Basotho male and female adolescents in secondary schools. Dissertation Abstracts International, 39 (8).

मिडिल स्टेज पर अध्यनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन

– डॉ. राजकुमारी गोला
सहायक प्रोफेसर

– उमरा इदरीस
शोधार्थिनी

सार : आकांक्षा स्तर एक ऐसा भाव है । जो किसी भी विद्यार्थी को उसके भविष्य में क्या करना है कैसे करना है उसके उपलक्ष में उसके प्रबल भाव को अपने अंदर बनाए रखने से है । विद्यार्थी अपने आने वाले भविष्य में क्या बनना चाहता है ? क्या करना चाहता है? वह अपने भविष्य को किस प्रकार जीना चाहता है? उसे

उन सभी को पूरा करने के लिए जो एक भाव विद्यार्थी के मन में होते हैं उसे हम आकांक्षा स्तर कहते हैं। विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर ही यह दर्शाता है कि उसके जीवन की नीव धनात्मक मानसिकता के साथ रखी गई है या नकारात्मक मानसिकता के साथ रखी गई है यही धनात्मक मानसिकता उसके आकांक्षा स्तर को अच्छा बनाती है और उसको आगे भविष्य में अच्छा काम करने में सहायता प्रदान करती है जिससे उसका भविष्य उज्जवल हो सकता है।

बीजक शब्द : सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थी, मानसिकता, आकांक्षा स्तर उज्जवल भविष्य।

प्रस्तावना : जैसा कि देखा जा सकता है कि जब कोई भी नव शिशु जब इस संसार में जन्म लेता है तब से उसका शारीरिक व मानसिक विकास शुरू हो जाता है और यह विकास निरंतर होता रहता है। जब बच्चा खुद को समाज व संसार की चीजों के साथ हल्के–हल्के समायोजित कर लेता है उसके बाद वह अपने भविष्य के बारे में विचार करना शुरू कर देता है। जब एक बच्चा विद्यालय में प्रवेश लेता है तो वह खुद को उसे समझ में समावेशित करता और ज्ञान में निरंतर विकास होने लगता है और जब निरंतर उसका विकास होता जाता है तब वह मानसिकता के विकास में निरंतर बढ़ता रहता है। तभी उसे विद्यार्थी के जीवन में आकांक्षा स्तर के जैसे भाव उत्पन्न होते हैं। आकांक्षा स्तर एक ऐसा भाव कहा जा सकता है जो विद्यार्थी अपने भविष्य को सुचारू रूप से चलने के लिए व अपने भविष्य को अच्छा बनाने के लिए जो भी काम करता है। वह पहले से ही अपने मां के भावों के साथ भाव रखने लगता है और उसके अनुसार निरंतर कार्य करने लगता है। किसी भी विद्यार्थी का आकांक्षा स्तर जितना प्रबल होता है उसके वर्तमान के कार्य करने की क्षमता भी उतनी ही प्रबल होती है। यदि किसी व्यक्ति के भविष्य के प्रति अच्छे विचार हैं, तो उसके कार्य इतनी प्रबल व मेहनत के साथ किए जाने वाले हैं कि भविष्य को अच्छा होने की संभावना अधिक बढ़ जाती है और यही अपने भविष्य को अच्छा करने के लिए एक प्रबल कार्य और प्रबल मन से किया गया कार्य को ही हम आकांक्षा स्तर कहते है ।

सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थी यह दोनों अलग–अलग प्रकार के विद्यार्थी देखने को मिलते हैं किसी भी विद्यालय में सामान्य और विकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में बहुत ही अंतर देखने को मिलता है। जिसका मुख्य कारण इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि सामान्य विद्यार्थी तो अपने भविष्य को सुचारू रूप से चलने के लिए खुलकर विचार कर सकते हैं वह किसी भी दोस्त से प्रेरित नहीं होते वह शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ माने जाते हैं जिससे वह किसी भी कार्य को करने के लिए संपूर्ण रूप से स्वस्थ होते हैं तो वह अपनी आकांक्षा स्तर को इस प्रकार सोचते हैं कि वह जो चाहे वह अपने भविष्य में बन सकते हैं और उसके लिए वह अच्छे से कार्य कर सकते हैं। विकलांग विद्यार्थी अपनी सोच व विचार को अपनी विकलांगता के चलते सीमित ही रखते हैं इन सब से विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर बहुत ही प्रभावित होता है और जब कि देखा जाए कि विकलांग विद्यार्थी हो या सामान्य विद्यार्थी वह दोनों ही खुल के अपने भविष्य के विचार रख सकते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व : प्रस्तुत शोध अध्ययन की बहुत ही आवश्यकता है जिसे हम एक विकलांग और सामान्य विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अच्छे से अध्ययन कर सकते हैं और उनके प्रति छुपे कारण को भी जान सकते हैं । यह माना जाता है कि सामान्य विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर बहुत ही प्रबल होता है, जैसे–जैसे एक विद्यार्थि का विकास हो जाता है वैसे–वैसे उसकी मानसिक विकास में भी वृद्धि होती रहती है सामान्य विद्यार्थी अपनी इच्छा के अनुसार भविष्य को चुनते हैं और उसके अनुसार निरंतर कार्य करते रहते हैं सामान्य विद्यार्थी अपने आकांक्षा स्तर को पूरा करने के लिए निरंतर अभ्यास करते रहते हैं । यदि दूसरी तरफ देखा जाए तो विकलांग विद्यार्थी जो किसी न किसी शारीरिक व मानसिक दोष से ग्रसित होते हैं वह अपने अंदर विद्यमान दोष पर नजर डालकर अपनी आकांक्षा स्तर में प्रबलता नहीं ला पाते। उनको कभी –

कभी ऐसा भी महसूस होता है कि वह अपने भविष्य में ज्यादा कुछ नहीं कर पाएंगे, उनमें एक नकारात्मक सोच उत्पन्न हो जाती है परंतु ऐसा कुछ भी नहीं है विकलांग विद्यार्थी अपने जीवन में बहुत कुछ कर सकते हैं वह जो अपने भविष्य में बनना चाहे वह बन सकते हैं विकलांग विद्यार्थियों को भी सामान्य विद्यार्थियों की तरह एक प्रबल आकांक्षा स्तर रखनी चाहिए यदि भूतकाल में देखा जाए तो हमारे देश में ऐसे बहुत से महान व्यक्ति रहे हैं जो किसी न किसी रूप से शारीरिक व मानसिक दोष से ग्रस्त थे । परंतु प्रबल आकांक्षा स्तर के चलते वह अपने भविष्य में एक महान व्यक्ति बनकर निकले जिन्हें आज देश में ही नहीं संसार में भी बहुत लोग एक महान व्यक्ति के रूप में जानते हैं परंतु उन लोगों ने अपनी विकलांगता को कभी भी अपने भविष्य में सपनों के बीच में बाधा के रूप में नहीं आने दिया । इसी प्रकार हम यह मान सकते हैं कि विकलांग विद्यार्थियों को भी सामान्य विद्यार्थियों के समान एक अच्छी व प्रबल आकांक्षा स्तर रखना चाहिए जिससे दोनों ही प्रकार के विद्यार्थियों का जीवन उज्जवल हो सके विकलांगता दोष के साथ–साथ बहुत कुछ सिखाती भी है और नए–नए कार्य करने के लिए प्रेरित भी करती है।

समस्या कथन : मिडिल स्टेज पर अध्यनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन ।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. सामान्य एवं विकलांग छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

2. सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं :–

1. सामान्य एवं विकलांग छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन विधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग शोध अध्ययन में किया गया है।

परिसीमांकन : प्रस्तुत शोध अध्ययन में मिडिल स्टेज के विद्यालयों में अध्यनरत कक्षा 8 के विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

परिकल्पना परीक्षण संख्या 1 : सामान्य एवं विकलांग छात्रों के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सामान्य एवं विकलांग छात्रों के आकांक्षा स्तर के सन्दर्भ में तुलनात्मक निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पना का परीक्षण तालिका संख्या 1 में किया गया है।

तालिका संख्या –1

मिडिल स्टेज पर सामान्य एवं विकलांग छात्रों के आकांक्षा स्तर

परिगणित मूल्य	छात्रों के प्राप्तांक	
	सामान्य	विकलांग
माध्य	53.71	50.77
प्रमाप विचलन	7.74	10.76
विद्यार्थियों की संख्या	228	113
माध्य अन्तर	2.94	
माध्य का प्रमाप विभ्रम	1.13	
टी–मूल्य	2.58	
सारणी मूल्य	1.96	
सर्थकता	5.58>1.96 (सार्थक)	
शून्य परिकल्पना	अस्वीकृत	

परिकल्पना परीक्षण के लिए सामान्य एवं विकलांग छात्रों के आकांक्षा स्तर के प्राप्तांकों के माध्य अंक अलग–अलग ज्ञात करके उनके बीच टी – अनुपात ज्ञात किया गया है। तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि सामान्य छात्रों के औसत प्राप्तांक 53.71 तथा विकलांग छात्रों के औसत प्राप्तांक 50.77 हैं। दोनों का माध्य अन्तर 294 है। माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम 1.13 है। परिगणित टी – अनुपात 2.58 है जो कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक है । शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई है।

परिकल्पना परीक्षण संख्या – 2 : " सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक

अन्तर नहीं है। सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के आकांक्षा स्तर के सन्दर्भ में तुलनात्मक निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पना का परीक्षण तालिका संख्या 2 में किया गया है।

तालिका संख्या –2

मिडिल स्टेज पर सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के आकांक्षा स्तर

परिगणित मूल्य	छात्राओं के प्राप्तांक	
	सामान्य	विकलांग
माध्य	51.34	49.69
प्रमाप विचलन	7.74	5.85
विद्यार्थियों की संख्या	202	57
माध्य अन्तर	1.65	
माध्य का प्रमाप विभ्रम	0.95	
टी–मूल्य	1.74	
सारणी मूल्य	1.96	
सर्थकता	1.74 >1.96 (निरर्थक)	
शून्य परिकल्पना	स्वीकृत	

परिकल्पना परीक्षण के लिए सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के आकांक्षा स्तर के माध्य अंक अलग–अलग ज्ञात करके उनके बीच टी– अनुपात ज्ञात किया गया है। तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि सामान्य छात्राओं के औसत प्राप्तांक 51.34 तथा विकलांग छात्राओं के औसत प्राप्तांक 49.69 हैं। दोनों का माध्य अन्तर 1.65 है। माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम 0.95 है । परिगणित टी–अनुपात 1.74 है जो कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 से कम है। अतः अन्तर निरर्थक है। शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई है।

निष्कर्ष की व्याख्या : निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामान्य एवं विकलांग छात्रों के आकांक्षा स्तर में अन्तर है। माध्य प्राप्तांकों की स्थिति के आधार पर दूसरे शब्दों में सामान्य छात्रों का आकांक्षा स्तर विकलांग छात्रों से श्रेष्ठ हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के आकांक्षा स्तर में अन्तर नहीं है। दूसरे शब्दों में, सामान्य एवं विकलांग छात्राओं का आकांक्षा स्तर एक समान है।

– **डॉ. राजकुमारी गोला**
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

– **उमरा इदरीस,** शोधार्थी
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद मो. **7017774936**

संदर्भ :

- अरोड़ा, रीता (2005); ''शिक्षा में नव चिन्तन'', जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।
- अग्निहोत्री, रविन्द्र (2007); ''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याऐं एवं समाधान'', जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- भट्टाचार्य, जी0सी0 (2005); ''अध्यापक शिक्षा'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- दुबे, श्यामाचरण (2005); ''भारतीय समाज'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–126।
- लाल एवं पलोड़ (2007); ''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'', मेरठः आर0 लाल बुक डिपा।
- प्रसाद, देवी (2001); ''शिक्षा का वाहनः कला'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–68,।
- पाण्डेय, राम शुक्ल (2007); ''शैक्षिक नियोजन एवं वित्त प्रबन्धन'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ–105, 115, 116, 124।
- शर्मा, रजनी एवं पाण्डेय, एस0पी0 (2005); ''शिक्षा एवं भारतीय समाज'', तयपुरः शिक्षा प्रकाशन, पृष्ठ 128–129।
- सुखिया, एस0पी0 (2005); ''विद्यालय प्रशासन एवं संगठन'', मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।